

Press Release

Under the guidance of Dr. Sanjay Singh Rathore, Project Coordinator, Division of Agronomy, ICAR–Indian Agricultural Research Institute (IARI), New Delhi, a Kisan Gosthi on “Fermented Organic Manure (FOM) for Soil Enrichment, Income Enhancement and Environmental Balance” was successfully organized on 25 December 2025 at Krishi Vigyan Kendra, Alwar, Rajasthan, in collaboration with the Division of Agronomy, IARI, New Delhi. The programme was conducted under the CSR-supported project titled **“Evaluation, outreach, and up-scaling of fermented organic manures for sustainably enhancing productivity and reducing environmental footprints of predominant cropping systems in India.”** Fermented Organic Manure (FOM), a biologically stable organic input produced through microbial fermentation of organic residues and digested biomass from biogas plants, was the central theme of the deliberations. The technical sessions highlighted the role of FOM in ensuring slow and steady nutrient release, improving soil structure and water-holding capacity, enhancing nutrient-use efficiency, promoting beneficial soil microorganisms, and reducing the environmental footprint of crop production. The Kisan Gosthi witnessed active participation of a large number of farmers from the Bansur–Alwar region. Farmers were sensitized to the preparation, quality aspects, and field application of FOM in field crops, oilseeds, and horticultural systems. Discussions emphasized that FOM can effectively reduce dependence on chemical fertilizers while improving soil health, crop productivity, and farm profitability, particularly under semi-arid conditions of Rajasthan. The programme was organized under the leadership of Dr. Sanjay Singh Rathore (Project Coordinator), Dr. Sushil Kumar Sharma (Head, KVK Alwar), Dr. Kaipla Shekhawat (Co-Principal Investigator & Principal Scientist), Dr. Subhash Babu (Co-Principal Investigator & Senior Scientist), and Dr. Arjun Singh (Co-Principal Investigator & Scientist), along with subject-matter specialists from plant protection, horticulture, and agricultural extension. Progressive farmers also shared their experiences and perspectives during interactive sessions.

डॉ संजय सिंह राठौर परियोजना समन्वयक सस्य विज्ञान संभाग भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईएआरआई), नई दिल्ली के मार्गदर्शन में "किण्वित जैविक खाद (फॉम) द्वारा मुदा समृद्धि आय वृद्धि एवं पर्यावरण संतुलन" विषय पर 25 दिसम्बर 2025 को कृषि विज्ञान केंद्र, अलवर, राजस्थान में एक किसान गोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सस्य विज्ञान संभाग, IARI, नई दिल्ली के सहयोग से सीएसआर समर्थित परियोजना "भारत की प्रमुख प्रमुख फसल प्रणालियों में उत्पादकता को सतत रूप से बढ़ाने तथा पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने हेतु किण्वित जैविक खाद का मूल्यांकन, प्रसार एवं विस्तार के अंतर्गत आयोजित किया गया। किसान गोष्ठी में किण्वित जैविक खाद को मुख्य विषय के रूप में रखा गया जो जैव गैस संयंत्रों से प्राप्त पचाए गए जैविक पदार्थ एवं कृषि अपशिष्टों के सुक्ष्मजीवी किण्वन द्वारा तैयार की जाने वाली एक जैविक रूप से स्थिर खाद है। तकनीकी सत्रों में फॉम की धीमी एवं संतुलित पोषक तत्व आपूर्ति मृदा संरचना एवं जल धारण क्षमता में सुधार एवं पोषक तत्व उपयोग दक्षता में वृद्धि लाभकारी मुदा सुक्ष्मजीवों को प्रोत्साहन तथा फसल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में इसकी भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गई। गोष्ठी में बानसूर अलवर क्षेत्र के लगभग 250 महिला एवं पुरुष किसानों ने भाग लिया किसानों को फील्ड फसलों तिलहनी एवं बागवानी फसलों में थ्व की तैयारी विधि गुणवत्ता मानकों एवं प्रयोग की व्यावहारिक जानकारी दी गई। चर्चाओं में यह रेखांकित किया गया कि किण्वित जैविक खाद रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम करते हुए मृदा स्वास्थ्य फसल उत्पादकता एवं किसानों की आय में सुधार करने में प्रभावी सिद्ध हो सकती है विशेषकर राजस्थान की अर्ध शुष्क परिस्थितियों में। इस कार्यक्रम

का आयोजन डॉ संजय सिंह राठौर परियोजना समन्वयकजण डॉ० सुशील कुमार शर्मा अध्यक्ष कृषि विज्ञान केंद्र बानसूर अलवर, डॉ० कपिला शेखावत सह प्रधान अन्वेषक एवं प्रधान वैज्ञानिक), डॉ सुभाष बाबू सह प्रधान अन्वेषक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा डॉ अर्जुन सिंह सह प्रधान अन्वेषक एवं वैज्ञानिक के नेतृत्व में किया गया। साथ ही पादप संरक्षण बागवानी एवं कृषि विस्तार विषयों के विशेषज्ञों ने भी तकनीकी व्याख्यान दिए। गोष्ठी के दौरान प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभव साझा कर किसान वैज्ञानिक संवाद को और अधिक सशक्त बनाया।



प्रेस विज्ञप्ति

डॉ. संजय सिंह राठौर, परियोजना समन्वयक, सस्य विज्ञान संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI), नई दिल्ली के मार्गदर्शन में “किण्वित जैविक खाद (FOM) द्वारा मृदा समृद्धि, आय वृद्धि एवं पर्यावरण संतुलन” विषय पर 25 दिसम्बर 2025 को कृषि विज्ञान केंद्र, अलवर, राजस्थान में एक किसान गोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सस्य विज्ञान संभाग, IARI, नई दिल्ली के सहयोग से, सीएसआर समर्थित परियोजना “भारत की प्रमुख फसल प्रणालियों में उत्पादकता को सतत रूप से बढ़ाने तथा पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने हेतु किण्वित जैविक खाद का मूल्यांकन, प्रसार एवं विस्तार” के अंतर्गत आयोजित किया गया। किसान गोष्ठी में किण्वित जैविक खाद (FOM) को मुख्य विषय के रूप में रखा गया, जो जैव-गैस संयंत्रों से प्राप्त पचाए गए जैविक पदार्थ एवं कृषि अपशिष्टों के सूक्ष्मजीवी किण्वन द्वारा तैयार की जाने वाली एक जैविक रूप से स्थिर खाद है। तकनीकी सत्रों में FOM की धीमी एवं संतुलित पोषक तत्व आपूर्ति, मृदा संरचना एवं जल-धारण क्षमता में सुधार, पोषक तत्व उपयोग दक्षता में वृद्धि, लाभकारी मृदा सूक्ष्मजीवों को प्रोत्साहन तथा फसल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में इसकी भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गई। गोष्ठी में बानसूर-अलवर क्षेत्र के बड़ी संख्या में किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। किसानों को फील्ड फसलों, तिलहनी एवं बागवानी फसलों में FOM की तैयारी विधि, गुणवत्ता मानकों एवं प्रयोग की व्यावहारिक जानकारी दी गई। चर्चाओं में यह रेखांकित किया गया कि किण्वित जैविक खाद रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम करते हुए मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादकता एवं किसानों की आय में सुधार करने में प्रभावी सिद्ध हो सकती है, विशेषकर राजस्थान की अर्ध-शुष्क परिस्थितियों में। इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. संजय सिंह राठौर (परियोजना समन्वयक), डॉ. सुशील कुमार शर्मा (अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, अलवर), डॉ. कपिला शेखावत (सह-प्रधान अन्वेषक एवं प्रधान वैज्ञानिक), डॉ. सुभाष बाबू (सह-प्रधान अन्वेषक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक) तथा डॉ. अर्जुन सिंह (सह-प्रधान अन्वेषक एवं वैज्ञानिक) के नेतृत्व में किया गया। साथ ही पादप संरक्षण, बागवानी एवं कृषि विस्तार विषयों के विशेषज्ञों ने भी तकनीकी व्याख्यान दिए। गोष्ठी के दौरान प्रगतिशील किसानों ने अपने अनुभव साझा कर किसान-वैज्ञानिक संवाद को और अधिक सशक्त बनाया।

..... फोटो

